आपु गुप्त करि राखी मोकौं, मैं आयसु सिर मानि लियौ ।

देह-गेह सुधि रहति बिसारे, तुम तैं हितु नहिं और बियौ ।

अब मोकौं चरननि तर राखौ, हंसि नंद-नंदन अंग छियौ ।

सूर स्याम श्रीमुख की बानी, तुम पै प्यारी बसत जियौ ।।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **3×12=36**

(i) सूरदास जन्म से अंधे थे या बाद में अंधे हुए ? स्पष्ट कीजिए ।

(ii) सूरदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए ।

(iii) सूरदास की दार्शनिक चेतना पर प्रकाश डालिए ।

(iv) 'साहित्य लहरी' के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए ।

(v) सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विवेचना कीजिए ।

(vi) सूरदास के काव्य में चित्रित ब्रज संस्कृति एवं लोक तत्व पर प्रकाश डालिए ।

Roll No. ..... **Exam Code : M-21**

Subject Code—52826

M. A. EXAMINATION

(Batch 2017-19) (Main/Reappear)

(Third Semester)

HINDI

Hi-115

P Prapadh, Surdas (Elective Subject)

Time : 3 *Hours* *Maximum Marks :* 80

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **3×7=21**

(क) काहू के कुल तन न विचारत ।

अविगत की गति कहि न परति है, व्याध अजामिल तारत ।

कौन जाति अरु पाँति विदुर की, ताही कैं पग धारत ।

भोजन करत माँगि घर उनकैं, राज-मान मद टारत ।
ऐसे जनम-करम के ओछे, ओछिन हूँ ब्यौहारत ।
यहै सुभाव सूर के प्रभु कौ, भक्त-बछल प्रन पारत ।।

(ख) प्रभु हौं सब पतितनि कौ टीकौ ।
और पतित सब दिवस चारि के, हौं तौ जनमत ही को ।
बधिक अजामिल, गनिका तारि और पूतना ही कौ ।
मोहिं छांडि तुम और उधारे, मिटे सूल क्यौं जी कौ ।
कोउ न समरथ अघ करिबै कौं, खैंचि कहत हौं लीकौ ।
मरियत लाज सूर पतितनि में, मोहूँ तैं को नीकौ ।।

(ग) कमल-नैन हरि करौ कलेवा ।
माखन रोटी, सद्य जम्मौ दधि, भाँति-भाँति के मेवा ।

खारिक, दाख, चिरौंजी, किसमिस, उज्ज्वल गरी बदाम ।
सफरी, सेब, छुहारे, पिस्ता, जे तरबूजा नाम ।
अरु मेवा बहु-भाँति हैं षटरस के मिष्ठान्न ।
सूरदास प्रभु करत कलेवा, रीझे स्याम सुजान ।।

(घ) फेंट छाँड़ि मेरी देहु श्रीदामा ।
काहै कौं तुम रारि बढ़ावत, तनक बात कैं कामा ।
मेरी गेंद लेहु ता बदलैं, बांह गहत हौ धाइ ।
छोटौ बड़ौ न जानत काहूँ, करत बराबरि आइ ।
हम काहे कौं तुमहिं बराबर, बड़े नन्द के पूत ।
सूर स्याम दीन्है ही बनिहैं, बहुत कहावत धूत ।।

(ङ) तुम कहुँ देखे स्याम बिसासी ।
तनिक बजाई बाँस की मुरली, लै गए प्रान निकासी ।
कबहुँक आगैं, कबहुँक पाछैं, पग पग भरती उसासी ।
सूर स्याम-दरसन के कारण, निकसीं चंद-कला सी ।।

(च) कुल की लाज अकाज कियौ ।
तुम बिनु स्याम सुहात नहीं कछु, कहा करौं अति जरत हियौ ।

(i) पुष्टिमार्ग किसने चलाया ?

(ii) अष्टछाप की स्थापना किसने की ?

(iii) पाठ्य-पुस्तक 'सूरसागर' में कितने पद हैं ?

(iv) अष्टछाप में विट्ठलनाथ के शिष्यों के नाम बताइए ।

(v) 'सूरसागर' की रचना किस भाषा में हुई ?

(vi) सूरसागर के दृष्टिकूट पदों के संग्रह का क्या नाम है ?

(vii) सूरदास को पुष्टिमार्ग का जहाज किसने कहा है ?

(viii) सूरदास किस सम्प्रदाय में दीक्षित थे ?

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **250** शब्दों में होना चाहिए :

5×3=15

(i) सूरदास के प्रामाणिक जीवन-वृत्त पर टिप्पणी कीजिए ।

(ii) सूरसागर का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

(iii) सूरदास की माधुर्य भाव की भक्ति पर प्रकाश डालिए ।

(iv) 'सूर सारावली' की प्रामाणिकता स्पष्ट कीजिए ।

(v) सूरदास के काव्य में वियोग शृंगार का वर्णन कीजिए ।

(vi) सूरदास की दृष्टिकूट पदावली पर टिप्पणी लिखिए ।

(vii) सूरदास के भ्रमरगीत का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

(viii) सूरदास के प्रकृति वर्णन को स्पष्ट कीजिए ।

(ix) सूरकाव्य में पुष्टिमार्गीय भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए ।

(x) वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत दर्शन को स्पष्ट कीजिए ।

4. सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **8×1=8**